ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

खेल द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विकास

मानविन्द्र सिंह भादू, शोधार्थी (शारीरिक शिक्षा विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. गजेन्द्र सिंह सरोहा, सहायक आचार्य (शारीरिक शिक्षा विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

क्रीड़ा आज किसी क्षेत्र–विशेष या समाज–विशेष तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि एक वैश्विक (ग्लोबल) स्वरूप धारण कर चुका है। क्रीड़ा को इस वृहद् स्वरूप देने में आधुनिक संचार साधनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इन रूप में क्रीड़ा अन्तरर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रभावित करने की क्षमता विकसित करने की ऊँचाई तक अपने को प्रतिष्ठित कर चुका है। भारत–पाक या इंग्लैण्ड–आस्ट्रेलिया के सम्बन्ध को क्रीड़ा के सन्दर्भ में भी देखा जाता है। क्रीड़ा के इस रूप में प्रतिष्ठित होने की पृष्ठभूमि में हमारे नेतृत्व की संलग्नता तथा जन–सामान्य की क्रीड़ा के प्रति लगाव भी महत्वपूर्ण है।

वर्तमान क्रीड़ा आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच मैत्री सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने, दो शत्रु देशों को एक साथ जोड़ने तथा विश्व स्तर पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान एवं अन्तर्राष्ट्रीय समझ को विकसित करने में प्रभावी भूमिका अदा कर रहे हैं।

एक सामाजिक एवं शैक्षणिक वस्तु की भांति क्रीड़ा–जगत के विकास में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय रूप मौजूद हैं। पाश्चात्य विद्वाना मानते हैं कि क्रीड़ा का राष्ट्रीय रूप जीवन की खान्त खेती एवं किसी समाज के ऐतिहासिक तथा मनोवैज्ञानिक विकास पर निर्भर करता है।

राष्ट्रीय–क्रीड़ा का राष्ट्रीयता की संस्कृति एवं जिन्दगी जीने के तौर तीरकों से घनिष्ठ सम्बन्ध हैं, उनके अपने अलिखित नियम हैं, वे अपनी सरलता के कारण विशिष्ट हैं। मनोरंजन के लोकरूपों का सामूहिक आनंद सामान्यतः खुली हवा के वातावरण में प्राप्त किया जाता है और यह उन रूपों की स्वस्थ महत्ता को सहारा प्रदान करता है। ये रूप पृथक राष्ट्रीयताओं के व्यवहार के स्वीकृत मानकों के अनुसार क्रीड़ा–जगत में कार्यरत समस्त लोगों के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। व्यक्तिगत राष्ट्र के बौद्धिक जागरण आज सार्वजनिक सम्पत्ति है। राष्ट्रीय पक्षपात तथा लघु मानसिकता धीरे–धीरे असम्भव हो चुकी है।

क्रीड़ा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण सामाजिक विकास की एक अनिवार्य नियमितता है। वी० शेवचेन्को, जो कि मास्को में आयोजित सन् 1980 के ओलम्पिक में व्यवस्थापन समिति में जन सम्पर्क विभाग के प्रमुख थे, उनका तात्कालीन वक्तव्य निम्नांकित रहा – "सोवियन क्रीड़ा की सफलता के रहस्यों में से एक रहस्य इसकी अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना में समाविष्ट है। सोवियत खिलाड़ी उन सभी खेल प्रतियोगियों से, जो लगभग सौ से भी ज्यादा देशों में आते हैं और जिनमें कि बहुत से अन्तर्राष्ट्रीय समझौते तक ही आधारित है, मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखते हैं। वृहद् अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को कायम रखने के लिये तथा विश्व के सारे लोगों में एक जुटता लाने के लिये सोवियत क्रीड़ा अपना सम्पूर्ण योगदान प्रदान करती है, सोवियत संघ में १६७५ में हेलसिंकी समझौते के वास्तविकरण के तहत यह लोगों के बीच विचार विनिमय व संचार का भी सुखद निरूपण करती है।" सोवियत क्रीड़ा के अन्तर्राष्ट्रीय भावना की वास्तविकता की सबसे बड़ी पहचान यह है कि आज सोवियत क्रीड़ा संगठन लगभग सत्तर से भी ज्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्रीड़ा–समागम से संयुक्त है, जो इन संगठनों के अन्तर्गत क्रीड़ा–विकास के लिये कार्यरत है।

लेनिन ने लिखा था, ष्हम राष्ट्रीय संस्कृति नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति का समर्थन करते हैं जो कि प्रत्येक राष्ट्रीय संस्कृति के एक भाग को ही समाहित करती है– राष्ट्रीय संस्कृति के सिर्फ प्रजातांत्रिक तथा समाजवादी तथ्यों की दृढ़ता को।

क्रीड़ा विश्व–बन्धुत्व व शारीरिक विकास का सशक्त माध्यम है। दैनिक जीवन में खेलकूद का अति विशिष्ट स्थान है। मानव ने आज से 8–10 करोड़ वर्ष पूर्व जब इस धरा पर पग रखा, तभी खेल भावना ने अपनी सुर निकाली, मानव के यायावरी जीवन में भी इसने साथ न छोड़ा, मानव के विविध क्रियाकलाप स्वयं में एक खेल थे। उसकी प्रत्येक गतिविधि किसी–न–किसी खेल की जन्मदात्री बनी। खेलों का शुभारम्भ आत्मसुरक्षा के साथ ही हुआ है। तीरंदाजी को पाषाण युग में (८००० ई०पू०) यद्यपि एक शिकार खेलने के लिए प्रयुक्त होने वाली कला माना जाता था। खेलों के इतिहास में सबसे प्राचीन उपलब्ध होने वाला प्रमाण 'कुश्ती' कहा है जो २७५०–२६०० ई०पू० में मिला है। धीरे–धीरे खेलों का विकास हुआ। वर्तमान में तो खेल न केवल शारीरिक विकास व सशक्तता से सम्बद्ध रह गया है, अपितु इसका व्यापक व्यावसायीकरण भी हुआ है।

महान् दार्शनिक प्लेटो के अनुसार, "बालक को दण्ड की अपेक्षा खेल द्वारा नियंत्रण करना कहीं अच्छा है।" खेलकूद से स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। खेलने के दौरान शरीर की समस्त माँसपेशियाँ सक्रिय रहती हैं तथा रक्त प्रवाह शरीर में तीव्रता से होता है। इससे शरीर स्वस्थ बना रहता है। कहावत है– "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है।" उसमें अच्छे–बुरे को समझने की शक्ति होती है। स्वस्थ शरीर से चारित्रिक दुर्बलताएं मस्तिष्क में प्रवेश नहीं करतीं। छात्रों के लिए तो खेलकूद अपरिहार्य है। इससे छात्रों का मस्तिष्क एकाग्र बना रहता है। बालक की समझ खेल व अध्ययन के अतिरिक्त इधर–उधर नहीं भटकती। इसके अतिरिक्त खेलते समय बालक के अन्दर संयम, दृढ़ता, गभीरता, एकाग्रता एवं सहयोग की भावना का विकास होता है।

खेलकूद आपस में प्रेमपूर्वक, मिल जुलकर रहना, आपसी वैर–भाव समाप्त करना तथा विभिन्न जाति व सम्प्रदाय के साथ आपसी तालमेल के द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना सिखाता है। फलस्वरूप इससे सामाजिक सहयोग के भाव उत्पन्न होते हैं। हम आए दिन समाचार–पत्रों, दूरदर्शन, रेडियो के माध्यम से ऐसा महसूस करते हैं कि जब विभिन्न देशों की टीमें खेलती हैं, तो उनके सदस्यों में सहज ही मैत्रीभाव का विकास हो जाता है। क्रीड़ा जगत् में एक साथ भाग लेने वाले खिलाड़ी परस्पर प्रतिस्पर्द्धा तो करते हैं, परन्तु द्वेषभाव से दूर रहते हैं। खिलाड़ी वस्तुतः किसी देश के सच्चे प्रतिनिधि हो सकते हैं। खिलाड़ी हार–जीत को जब खिलाड़ी की भावना से लेने की शिक्षा पाते हैं, तो वे जीवन में भी सफलता असफलता के अवसरों पर सन्तुलन बनाए रखने में सफल होते हैं।

इस प्रकार खेलकूद से अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध (International Understanding) का विकास होता है। वर्तमान में विश्व बन्धुत्व की भावना की अति आवश्यकता है। आज सर्वत्र तनाव के विविध क्षेत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं, ऐसी परिस्थितियों में अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध 'विश्व शान्ति' का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। विश्व के सभी लोग चाहे वे किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, लिंग के हों, एक ही ईश्वर की संतान हैं। सभी के रंगों में एक ही प्रकार का रक्त संचारित होता है। सभी के लिए रोटी, कपड़ा और मकान प्राथमिक आवश्यकताएं हैं। सब शान्ति की तलाश में हैं। कुछ भटक से गए हैं। कुछ में समझदारी का अभाव है। इन परिस्थितियों से निपटने में खेलकूद की महती भूमिका है।

खेलकूद से समन्वय (Co-ordination) की भावना आती है। मिल–जुलकर कार्य करने की प्रेरणा समन्वय का आधार है। कार्य विभाजन द्वारा श्रम एवं सिक्के दोनों की बचत होती है। खेलकूद कार्य विभाजन के सर्वोत्तम प्रेरक हैं। आगे और आगे हम बढ़ते चलें, हम निरन्तर गतिशील हों, क्रियाशील हों, विकास की सर्वोत्तम विधा की तलाश हम जारी रखें। एकाध बार की असफलता से हम निराश न हों। इन सब भावनाओं का विकास खेलकूद से सर्वोत्तम रूप से होता है।

परिचयात्मक शोध के सोपान

क्रीड़ा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना है तथा शेष विश्व समुदाय से जुड़ना है, तो विकसित (अत्याधुनिक) तकनीकि एवं सुविधाओं की आवश्यकता होगी। इनके अभाव वाला राष्ट्र खेल के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास को प्रभावी नहीं बना सकता है। इस दृष्टि से विकसित राष्ट्रों के स्तर पर हमें भी क्रीड़ा तकनीकि एवं संसाधनों को विकसित करना होगा। भारतवर्ष विभिन्नताओं का महापारावार है। इस दृष्टि से एकता के सहायक शक्तियों को मजबूत करने की आवश्यकता यहाँ सबसे अधिक है। इस कृत्य को क्रीड़ा के माध्यम से सफलता से सम्पादित किया जा सकता है। खेल में विभिन्न राज्यों के खिलाड़ी एक टीम के रूप में खेलते हैं, किन्तु कहा जाता है (या भावना प्रकट होती है) कि, भारत की टीम खेल रही है। इस तरह निर्मित प्रत्येक राष्ट्रों की टीमें एक–दूसरे से खेलती हैं, तो वहाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध उभरकर सामने आता है।

परिचयात्मक शोध का महत्त्व

भारत में खेलों के विकास के लिए अखिल भारतीय खेल प्राधिकरण का गठन किया गया है। इस संगठन के द्वारा उत्कृष्ट खिलाड़ियों को तैयार करना तथा खेलों का विकास करना है। खेल प्राधिकरण का मुख्य ध्येय भारत के विभिन्न क्षेत्रों से योग्य खिलाड़ियों खोजकर उन्हें अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धाओं के योग्य बनाना भी है। इससे योग्यता को प्रोत्साहन मिलेगा और खेल में क्षेत्रीय संतुलन बनेगा। खेल प्राधिकरण अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में किस स्थिति में है का अध्ययन किया गया। जिस तरह से क्रीड़ा के खिलाड़ी वैश्विक व्यक्तित्व को धारण करते जा रहे हैं, उनकी माँग व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हो रही है। इस स्थिति का लाभ प्रायोजक अधिकाधिक मात्रा में उठाना चाहते हैं। इसके लिए प्रायोजक खिलाड़ियों को मुँहमाँगी कीमत चुका रहे हैं, किन्तु उनकी शर्त यह होती है कि, सार्वजनिक जीवन में खिलाड़िों को

उनके अनुसार रहना होगा। अतः खिलाड़ियों के मिलने–जुलने का दायरा, ड्रेस कोड, भाव–भंगिमाओं तथा पार्टियों/समारोहों के निर्धारण में प्रायोजकों की अहम् भूमिका होती है।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

1. "वर्तमान व्यावसायिक दृष्टिकोण" और "संचार साधनों की जन–सामान्य तक पहुँच" ने क्रीड़ा के प्रति समाज को उन्मुख किया है।
2. "क्रीड़ा की लोकप्रियता" तथा "आज के मानसिक उद्वेगात्मक (तनावयुक्त) वातावरण" ने क्रीड़ा को अन्तरर्राष्ट्रीय सद्भावना के साथ चिकित्सकीय महत्व के रूप में स्वीकारा जा रहा है।
3. "सामाजिक–सांस्कृतिक गत्यात्मकता" और "शारीरिक–बौद्धिक आवश्यकता" के अनुरूप क्रीड़ा नवीन प्रतिमान को धारण कर रहा है।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

भारत में खेलों के विकास के लिए अखिल भारतीय खेल प्राधिकरण का गठन किया गया है। इस संगठन के द्वारा उत्कृष्ट खिलाड़ियों को तैयार करना तथा खेलों का विकास करना है। खेल प्राधिकरण का मुख्य ध्येय भारत के विभिन्न क्षेत्रों से योग्य खिलाड़ियों खोजकर उन्हें अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धाओं के योग्य बनाना भी है। इससे योग्यता को प्रोत्साहन मिलेगा और खेल में क्षेत्रीय संतुलन बनेगा। खेल प्राधिकरण अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में किस स्थिति में है का अध्ययन किया गया। जिस तरह से क्रीड़ा के खिलाड़ी वैश्विक व्यक्तित्व को धारण करते जा रहे हैं, उनकी माँग व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हो रही है। इस स्थिति का लाभ प्रायोजक अधिकाधिक मात्रा में उठाना चाहते हैं। इसके लिए प्रायोजक खिलाड़ियों को मुँहमाँगी कीमत चुका रहे हैं, किन्तु उनकी शर्त यह होती है कि, सार्वजनिक जीवन में खिलाड़िों को उनके अनुसार रहना होगा। अतः खिलाड़ियों के मिलने–जुलने का दायरा, ड्रेस कोड, भाव–भंगिमाओं तथा पार्टियों/समारोहों के निर्धारण में प्रायोजकों की अहम् भूमिका होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चतुर्वेदी, शैलेश : "खिलाड़ी और ब्रैण्ड अम्बेसडर का खेल", हिन्दुस्तान, दैनिक समाचार पत्र, रवि उत्सव, 1 मई, 2005, पृ0 1.
2. नेहरू, अरूण : "खेल के मैदान में पक्षपात", दैनिक जागरण, वाराणसी, शनिवार, 2 सितम्बर 2006, पृ0 10.
3. गुप्त, बसंत : "टेनिस में फैशन की धूम", सहारा समय, 6 सितम्बर, 2006, पृ0 16.
4. दुबे, श्यामाचरण : "मानव और संस्कृति", पृ0 1.
5. नेहरू, अरूणः "खेल के मैदान में पक्षपात", दैनिक जागरण, वाराणसी, शनिवार, 2 सितम्बर 2006, पृ0 10. प्रतियोगिता दर्पणः "18वें राष्ट्रमण्डल खेल मेलबर्न में सम्पन्न", मई 2006, पृ0 1767. ʼ
6. प्रतियोगिता दर्पणः "सैफ खेलों में भारत का दबदबा बरकरार", अक्टूबर, 2006, पृ0 435.
7. प्रतियोगिता दर्पण, खेलकूद विशेषांक, नई दिल्ली, 2006, पृ0 22–24. लखनपाल, चन्द्रावती : "स्त्रियों की स्थिति", पृ0 25. ʼ